"जब मैं भूला रे भाई"

प. श्रीहुजूर गृन्धमुनि नाम साहब आर्चाय कबीर पंथ, यह प्रवचन आगरा में दिनांक 2-11-88 को दिए गये ।

उपस्थित सज्जनों एवं महिलाओं !

सज्जनों, एक बार एक नदी अपनी उद्‌गम स्थान से सागर से मिलने के लिए चल पड़ी । मन में बड़ी प्यास थी । आस थी, इसीलिए पर्वतों को पार करती हुई निरन्तर चलती रही । अचानक एक रेगिस्तान में जाकर फंस गयी नदी का प्रवाह, रेत के समूह में विलीन होने लगा । नदी को बड़ा डर हुआ कि आज तो मैं उस रेगिस्तान में समाप्त हो जाऊंगी, ना तो मेरा कोई चिन्ह बचेगा, ना नाम बचेगा, ये सोचकर उसे बड़ी वेदना होने लगी । बड़ी पीड़ा होने लगी, नदी बड़ी व्याकुल हो गई । तभी आवाज आई कि देख जरा अपनी आँख उठा और जिस प्रकार हवा रेगिस्तान को पार कर रही है उसी प्रकार तू भी भाप बनकर उस हवा के साथ हो जा और रेगिस्तान को पार करके जा । नदी ने कहा, यदि मैं भाप बन गई तो मेरा नाम और रूप का क्या होगा ? भाप बनने के बाद फिर मैं कैसे जान पाऊँगी कि मैं वही नदी हूँ । फिर आकाशवाणी हुई, अरे देख, तूने अभी तक तो अपना नाम और रूप खोया नहीं । नाम और रूप खोने का तुझे अनुभव ही नहीं है । इस धरती ने अनन्त बार अपना नाम खोया है, रूप खोया है । एक नही अनन्त धरती का इतिहास मैं जानता हूँ । इसलिए तूँ या तो प्रयत्न कर ले कि एक बार अपना नाम खो ले, रूप खो ले,

और हवा के साथ इस पार से उस पार जा । कहते हैं नदी ने वही किया जो आकाशवाणी हुई थी । और जाकर समुन्द्र के तट पर बरसने लगी और समुद्र से मिल गई । रेगिस्तान में, नदी होकर भी अपने को खो देती है । रेगिस्तान में नदी खोकर अपने को बचा नहीं पाती । समुद्र में खोकर भी नदी अपने को खो देती है बचा नहीं पाती, लेकिन दोनों के खोने में जमीन-आसमान का अंतर हैं । नदी जब अपने को रेगिस्तान में खोती है । एक पीड़ा है, एक वेदना है, एक दर्द है, एक व्याकुलता है । किन्तु उपलब्धि कुछ भी नहीं, पाना कुछ भी नहीं होता वहाँ, किन्तु वही नदी जब समुद्र में मिल जाती है वो भी वहाँ बचती नहीं । ना तो वहाँ कोई नदी बचती ना उसका नाम बचता, ना रूप बचता, ना आकार बचता, ना प्रकार बचता । वहाँ भी नदी खो जाती है, किन्तु यह खोना-खोना नहीं होता । इसमें बड़ी उपलब्धि होती है । नदी समुद्र में मिलकर, समुद्र बन जाती है, विशाल बन जाती है । हर अणु में, हर कण-कण मे, हर बूँद-बूँद में समुद्र विद्यमान होता है । एक बीज को आप खेत में डाल देंगे तो बीज मिटेगा, विना मिटे नहीं रह सकता । लेकिन धरती में पड़कर मिटने से तो यही है कि वो धरती में पड़ेगा, मिटेगा, एक वृक्ष बनेगा, और अपने जैसे अनन्त वृक्षों, बीजों को जन्म देगा । किन्तु जब उसी बीज को आप पत्थर पर, खल पर, रगड़ डालेंगे, पीस डालेंगे तो ही नष्ट होता है । लेकिन इस नष्ट होने में, उसकी सारी विशालता नष्ट हो जाती है । ना तो अब बीज पनप पायेगा, ना अपने जैसे अनन्त बीजों को जन्म दे पाएगा । हम भी विलीन होते हैं, नष्ट होते हैं, समाप्त होते हैं दुनिया में रहकर । यहाँ दुनिया में रहकर हम अपने आप को बचा नहीं पाते । किसी ने आज तक बचा नही पाया अपने को इस दुनियाँ में रहकर । लेकिन नहीं बचाने का अर्थ यही होता है कि इस दुनियाँ में हमें पीड़ा मिलती है, दर्द मिलता है, वेदना मिलती है, व्याकुलता मिलती है और सारा का सारा जीवन इसी वेदना में, इसी पीड़ा में व्यतीत हो जाता है ।

और मिलता कुछ भी नहीं, केवल एक पश्चाताप के सिवाय और जब हमें परमात्मा की उपलब्धि होती है, हम परमात्मा को पाते हैं, तब भी हम मिटते हैं । बिना मिटे, बिना खोंये, कभी परमात्मा आज तक मिला नहीं किसी को । परमात्मा जब मिलता है तब भी हम खोते हैं, मिटते हैं । किन्तु उसमें एक बड़ी उपलब्धि है कि हम परमात्मा से मिलकर उसके स्वरूप में, उसके आकार में, उसके प्रकार में, उसके जैसे हो जाते हैं । परमात्मा का अंत नही होता । परमात्मा ना तो जन्म लेता है, ना मरता है । इसीलिए जब हम परमात्मा से मिल जाते हैं तब हमारा भी जन्म और मरण् समाप्त हो जाता है । संसार का आवागमन का चक्र टूट जाता है और हम परमात्मा जैसे ही अजर-अमर हो जाते हैं । इसी बात को साहब कबीर ने अपने एक पद में समझाया है । मैं केवल एक ही पद का, उनका आप लोगों के सामने भावार्थ प्रस्तुत करता हूँ । उसकी व्याख्या प्रस्तुत करूँगा और समझाऊँगा । शब्द बड़ा मनमोहक है, अच्छा भी है, शब्द है साहब का सद्गुरु कहते हैं :-

'जब मैं भुला रे मेरे भाई, मेरे सद्गुरु जुगत लखाई''

सद्गुरु स्वयं कहते हैं कि जब मैं भूल गया, तब मेरे सद्गुरु ने मुझे रास्ता दिखाया । कबीर तो स्वयं सद्गुरु थे । सद्गुरु का कोई और सद्गुरु हो नहीं सकता । उनका सद्गुरु हो सकता है तो केवल सतपुरुष ही हो सकता । उनका सद्गुरु हो सकता है तो वे स्वयं अपने ही सद्गुरु हो सकते हैं । दूसरा कौन हो सकता है ? तो सद्गुरु कहते हैं –

'जव भुला रे मेरे भाई''

जब मैं स्वयं भूल गया, अपने रास्ते से विचलित हो गया, तो मेरे सद्गुरु ने, मेरे परमात्मा ने मुझे रास्ता वतलाया । कबीर साहव कहते हैं उनकी एक साखी है ।

"पीछे लागा जाय था, लोक वेद के साथ ।
आगे से सद्गुरु मिला, दीपक दीन्हा हाथ ।।

मैं ही इस संसार में आकर ये लोक और वेद के पीछे-पीछे जा रहा था, उसका अनुसरण कर रहा था, अनुयायी था । सामने से मुझे सद्गुरु मिले और मेरे हाथ में एक जलता हुआ दीपक दिया । दुनियाँ में केवल सद्गुरु का काम केवल हाथ में दीपक देना ही होता है और कोई दूसरा काम नहीं होता । स्टेज में बैठकर उपदेश देना सद्गुरु का काम नहीं होता है । ये तो दुनियाँ के जो पाखण्डी लोग हैं, धर्मगुरु लोग हैं । वे लोग स्टेज में बैठकर अनाप-सनाप लोगों को समझाया करते हैं । सद्गुरु का काम तो केवल एक ही है अपने भक्तों के हाथ में दीपक दे देना है और उसे पाकर भक्त जन्म-जन्म की भी यात्रा करता चला जाये तो उसका प्रकाश, उससे दूर नहीं होता । दीपक आपके हाथ में है । जितना कदम आप आगे बढ़ेंगे उतना ही कदम दीपक का प्रकाश आपका आगे बढ़ेगा । यदि आप जन्म-जन्म चलते रहेंगे तो जन्म-जन्म दीपक का प्रकाश आपके साथ चलता रहेगा । अंधेरा कभी होगा ही नहीं । इसलिये सद्गुरु जब भी देते हैं तो हाथ में दीपक ही देते है । इसलिए सद्गुरु में और धर्मगुरु में जमीन-आसमान का अंतर है । सद्गुरु होते है वे अपने अनुभव के आधार पर ही जीते हैं जो धर्मगुरु होते हैं वे हमेशा विरासत के आधार पर जीते हैं । उनका अनुभव कुछ भी नहीं होता है । जो विरासत में उन्हें ज्ञान मिलता है, मान मिलता है सम्पत्ति मिलती है, उसका ही उपयोग करते हैं । जितने भी संसार में धर्मगुरु हो गये । उन्होंने कभी किसी का अनुसरण नहीं किया । चाहे बुद्ध हो, चाहे महावीर हो, चाहे जीसस हो, चाहे सद्गुरु कबीर साहब हो, चाहे नानक हो जितने भी हो इन सभी लोगों ने कभी किसी का अनुसरण नही किया । बुद्ध ने कभी नहीं कहा कि वेद में ऐसा लिखा है, उपनिषद में ऐसा लिखा है, कि अमुक में ऐसा लिखा है, अमुक में ऐसा लिखा है । महावीर स्वामी ने भी कभी ऐसा नहीं

कहा कि अमुक ग्रन्थ में ऐसा लिखा है, पुराण में लिखा है, शास्त्रो में लिखा है। कबीर साहब ने भी कभी ऐसा नहीं कि अमुक ग्रन्थ में लिखा है, ऐसा लिखा है, वैसा लिखा है कभी नहीं । जो कह रहे हैं वो उनका खुद का है, वो उनका खुद का अनुभव है । यदि वेदो सें मिल गई उनकी वाणियां तो वाह-वाह और न मिली तो कोई बात नहीं, चिन्ता की कोई बात नहीं । झाड़-फटकार कर आगे चल देने वाले, शास्त्रों से मिल जाना कोई बात नही । शास्त्रों से तो आप जो कहते हैं वो भी मिल जाएगा । लेकिन इसका मतलब ये तो नहीं हुआ कि आप अनुभवी हैं, आप सद्गुरु हैं । ऐसा कभी नहीं होता । कोई भी आदमी एक-चार ग्रन्थों का अध्ययन कर लें और पण्डित बन जाएँ । पण्डित बनना, सद्गुरु बनना नहीं होता कभी और एक बात और देखेंगे दुनियाँ में धर्मगुरु जितना कंगाल होता है, जितना गरीब होता है, उतना और कोई नहीं होता । धर्मगुरु के पास होता क्या है ? धर्मगुरुओं के पास होता क्या है ? कुछ भी नहीं होता । किसी भी धर्मगुरु को पूछो, आप चाहें सनातन धर्म के, धर्मगुरुओं को पूछो, इस्लाम के धर्मगुरुओं को पूछो । किसी भी धर्मगुरुओं को पूछो । आप पूछो, आप सनातन धर्म के धर्मगुरुओं को महाराज जी, आप कुछ तो बता दो तो जल्दी से दो श्लोक गीता के बता देंगे, उपनिषद् के बतला देंगे । अरे भाई ! हम ना तो गीता की बात पूछ रहे हैं, ना उपनिषद् की बात पूछ रहे हैं । यह हमें पूछना होता, जानना होता, तो हम स्वयं पढ़ लेते गीता और उपनिषद । हम भी तो पढे लिखे हैं, आप क्या जानते हैं ? ये ना बताओ आप ।आपने कुछ कमाया हो जीवन में, कुछ पाया हो जीवन में वही बतलाओ । तो कोई नहीं बतलाने वाला । ये दूसरे की सम्पत्ति पर जीते हैं । कहा है भगवान कृष्ण ने, उसका उपयोग ये कर रहें हैं । दुनियाँ में पूजा उन्हीं के कारण हो रही है । एक बात देखेंगे आप दुनियाँ में जो उनके अनुयायी हैं भगवान कृष्ण पर श्रद्धा है, पण्डितों पर श्रद्धा नहीं है, लेकिन उस श्रद्धा का उपयोग पण्डित जन कर रहें हैं । बुद्ध के अनुयायी हैं, बुद्ध की

वाणी को अपनाकर उससे अपना मतलब निकाल रहें है । सभी जगह, अब आप के धर्म में नहीं होता ? कबीर पंथ में भी ऐसा होता है । कबीर पंथ के धर्मगुरु लोग नहीं है ऐसे ही तो हैं । उनसे पूछो भाई आप दो शब्द बता दो ! तो बीजक की एक आध रमैनी बता देंगे, पद बता, देंगे, साखी बता देंगे या अनुराग सागर कंह देंगे बोध सागर कह देंगे । अरे भाई ! ये तो हम सब भी जानते हैं, हम भी पढ़ते हैं । तुमने आज तक क्या जाना ये ना बताओ आप तो कोई बताने के लिए तैयार नहीं । तो सोचो आप, इनसे बड़ा गरीब, इनसे बड़ा कंगाल, दुनियाँ में और कौन है ? लोग कबीर पर श्रद्धा करते हैं । लेकिन हम पर कोई श्रद्धा नहीं करता । लेकिन जो लोग कबीर पर श्रद्धा रखते हैं, उसका प्रयोग डट कर करते हैं अपने स्वार्थ के लिए । कभी कुछ भी नहीं रखी । लोग कबीर के नाम से रूपये देते हैं, लेकिन कमाते हम लोग हैं । हर दृष्टिकोण से देखेंगे तो महापुरुष के नाम से हम जीने वाले लोग हैं । जितने भी धर्मगुरु लोग हैं सब अपने महापुरुषों के नाम पर जीने वाले लोग हैं । इसलिए बड़े कंगाल हैं, गरीब हैं । इनसे गरीब दुनियाँ में कोई है ही नहीं । तो इसलिए देखेंगे आप धर्मगुरुओं में और सद्गुरुओं में जमीन-आसमान का अंतर है ।

कबीर धर्मगुरु नहीं थे। यदि कबीर को हम धर्मगुरु कहेंगे तो हम लोगों को क्या कहेंगे ? आप हम लोग धर्मगुरु हैं । कबीर तो सद्गुरु हैं । इसलिए बहुत से लोग ऐसे भी होते हैं जो अपने को सद्गुरु कहलवाते हैं । ये बड़ी विडम्बना कबीर पंथ में भी । तो दया करके अपने ही कबीरपंथ के लोगों में मैं कहता हूँ कि अपने को कभी सद्गुरु के नाम से सम्बोधित मत करो । तुम्हारा अनन्त जीवन भी बीत जायेगा तो भी नहीं बन पाओगे तुम सद्गुरु तो कबीर सद्गुरु थे । उन्होंने कहा –

"जब भुला रे मेरे भाई, मेरे सद्गुरु जुगत लखाई"

मेरे सद्गुरु ने रास्ता बतलाया, राह बतलाई मार्ग बतलाया फिर आगे कहते हैं देखो बड़ी सार्थक बात है उनकी–

"क्रिया कर्म आचार मैं छाड़ा, छाड़ा तीरथ का नहाना ।
सगरी दुनियां भई सयानी, इक मैं ही बौराना ।"

"क्रिया कर्म आचार मैं छाड़ा" ये सब कुछ का मैंने परित्याग कर दिया । सारी की सारी दुनियाँ तो क्रिया-कर्म में व्यस्त है । एक वृद्ध को देखो, बालक को देखो, नारी को देखो, पुरुष को देखो, हिन्दू को देखो, मुसलमान को देखो, सिक्ख को देखो, ईसाई को देखो, सभी लोग तो क्रिया काण्ड में उलझे हुए हैं और इनके क्रिया काण्ड को देखो तो ऐसा प्रतीत होता है कि ये जितने भी लोग हैं, ये सब बड़े बुद्धिमान लोग हैं। बड़े विचारवान् लोग हैं । किन्तु मैंने इन सारी क्रिया-कलापों का परित्याग कर दिया है तो ऐसा लग रहा है कि दुनियाँ मे मैं ही एक अनपढ़ आदमी हूँ । मैं ही अनजाना आदमी हूँ । मैं ही एक पागल आदमी हूँ । कबीर साहब कहते हैं, लेकिन ऐसा नहीं है बात ठीक विपरीत है जो क्रिया-काण्ड के विपरीत में जाता है, जो जग विरोधी होता है, वो ही तो संत कहलाता है । दुनियाँ के मार्ग पर चलना बहुत सुगम होता है, बहुत आसान होता है । किन्तु जो दुनियाँ का विरोध करके, दुनियाँ की आँखों में ऊंगली डालकर जो दुनियाँ को समझाने का जिनमें साहस होता है, जिनमें हिम्मत होती है । वही युग प्रवर्तक भी होते हैं, वही संत भी होते हैं, वही सद्गुरु भी होते हैं तो दुनियाँ के लोग तो ऐसे राही को, ऐसे मार्गी को तो पागल कहेंगे ही जो दुनियाँ का विरोध करते हैं । आज, आप दुनियाँ का विरोध करो तो दुनियाँ आपको पागल कहेंगी । कोई इस में देर नहीं लगेगी तो दुनियाँ का दृष्टिकोण सही नहीं है । साहब के दृष्टिकोण सही है । साहब पागल नहीं, दुनियाँ पागल है । तो साहब कबीर कहते हैं –

"सगरी दुनिया भई सयानी"

ऐसा लगता है कि सारी दुनियाँ सयानी लोग हैं। ये जितने भी लोग हैं दुनियाँ के सयाने लोग हैं ओर मैं एक बौरा गया हूँ, पागल हो गया हूँ। किन्तु ऐसा नहीं कबीर ही सयाने हैं और हम सब बौरा लोग हैं। किसी पागल को देखो आप पागलखाने में जाकर। उनसे पागल से बात तो करो आप तो कोई भी पागल ऐसा नहीं कहेगा कि मैं पागल हूँ। हर पागल यही कहेगा कि मैं अच्छा हूँ और तुम को पागल कहकर हँसेगा वो। तो दुनियाँ के लोग ऐसे ही है यदि कबीर को पागल कहते हैं तो कबीर पागल नहीं है, हम सब पागल हैं और कबीर सयाने हैं, सार्थक हैं, सही हैं :–

"सगरी दुनिया भई सयानी, एक मैं ही बौराना।"

आगे कहते हैं देखिये बहुत हर बात उनकी बड़ी सार्थक है –

"ना मैं जॉनू सेवा बंदगी, ना मैं पुहुप चढाई।
ना मैं मूरती धर सिंघासन, ना मैं घंट बजाई ।।"

"ना मैं जानू सेवा बंदगी" मैं सेवा बंदगी ये तो जानता ही नहीं, जीवन में मैंने की ही नहीं, कभी किसी की सेवा और बंदगी की ही नहीं। एक बड़ा सा, बड़ा अजीब लगेगा ना यह पद। हम सभी लोग कहते हैं कि भाई सेवा करो, बंदगी करो, गुरुजन की करो, परमात्मा कीकरो, संतो की करो और कबीर कहते हैं कि मैंने आज तक सेवा बंदगी की ही नहीं, अपने जीवन में। मेरे जीवन में स्थान ही नहीं सेवा बंदगी का। कबीर कहते हैं तो बात बिल्कुल ठीक कहते हैं। आप सेवा किसकी करते हैं। आप सेवा उसी की करते हैंजो आप से अलग होता है, जो आप से पराया होता है, जो आप से विलब होता है। चाहे गुरु हो, सद्गुरु हो। कोई भी हो वो आप से अलग होते हैं। तभी तो सेवा करते हैं, सेवा का मतलब ही है कि आप जिसकी सेवा करते हैं वो आप से अलग हैं इसलिये आप सेवा करते हैं।

कबीर कहते हैं कि परमात्मा तो मुझसे कभी अलग हुआ ही नहीं तो मैं सेवा किसी करूँ, किस की बंदगी करूँ । भाई, मैं जब परमात्मा से अलग हुआ ही नहीं, परमात्मा मुझसे अलग हुए ही नहीं, तो फिर सेवा कैसी । इसलिए साहब कबीर कहते हैं –

"या मन सुमरे राम को "

"मेरा मन सुमिरे राम को, या रामहि आहि ।
जब मन रामहि हो रहा, तो सीस नावऊँ काहि ।।"

तब मेरा मन परामात्मा को स्मरण करता है और परमात्मा मेरे मन में आ जाते हैं । जब मन ही राम में हो जाता है तो फिर किसे सीस नवानाहै, किसे नस्मकार करना है, किसे किसकी सेवा करनी है । सारा जीवन ही जब परमात्मा से ओत-प्रोत हो जाए तो फिर सेवा का तो अर्थ ही नहीं । इसलिए साहब कबीर ने कहा –

"हेरत-हेरत हे सखी, रहा कबीर हेराय,
बूँद समानी समुद्र, सो कस हेरी जाय ।
बूँद समानी समुद्र में, जानत हे सब कोय,
ओर समुद्र समाना बूँद में, तो जाने बिरला कोय ।।"

बूँद जब समुद्र में मिल गई तो बूँद समुद्रि अलग कैसी होगी ? कैसे विलब होगी और कैसे सेवा करेगी वो । वैसे ही कबीर जब परमात्मा से, सत्पुरुष से, अनन्त से मिल गये तो सेवा का तो कोई अर्थ नहीं होता । दूजे होते, अलग होते तो सेवा का कोई अर्थ भी होता । इसलिए कबीर साहब कहते हैं:–

"ना मैं जानु सेवा बन्दगी, ना मैं पुहुप चढ़ाई"

ना मैं कभी किसी के मन्दिर में, मस्जिद में गया, ना ये पुष्प चढाई, 'ना मैं मूरति धरे सिंघासन, ना मैं घंट बजाई" ना तो किसी की मूर्ति सिंहासन में रखी और ना मैंने ये घड़ी घंट का ही प्रयोग किया ।

कबीर साहब के जीवन में एक बड़ी घटना आती है । उसे हम सभी लोग जानते हैं । हुआ क्या कि कबीर एक बार जाकर एक मन्दिर के सामने लेट गए । मन्दिर इधर था, उधर ही पैर कर लिया उन्होंनें और सो गये । कुछ देर के बाद पहुँचे वहीं पण्डित लोग, पुरोहित लोग, कबीर को उठाया । कबीर से चिढ़े हुए तो वे पहले से ही थे, उठाया और झकझोरा और कहा, कबीर तुम तो सचमुच ही पागल हो । बड़े अनपढ़ हो, तुम्हें इतनी भी जानकारी नहीं कि जिधर परमात्मा है उधर, जिधर मन्दिर है तुमने उधर ही पैर कर लिये । और सो गये । कबीर उठे, हाथ जोड़ लिये पंडितों से पुरोहितों से क्योंकि संत जो होते हैं हमेशा हाथ जोड़ा करते हैं । यदि पंडित होते तो वाद-विवाद में उतर जाते । और वाद-विवाद में नहीं मानते तो फिर डन्डा में उतर जाते वो ही तो तरीका होता है ना एक शास्त्रों का तरीका होता है एक डण्डा का तरीका है । दो में से किसी न किसी को मानेंगे ना आप । लेकिन संत कभी ऐसा नही करते । मानना उनका काम नहीं होता । किसी को विवश करना उनका काम नहीं होता । आग्रह होता है, विनम्रता होती है । उनके जीवन में सुझाव होता है । उनके जीवन में ऐसा है, ऐसा नहीं कहते जैसा गाँधी जी कभी किया करते थे कि नहीं । गाँधी जी को मैं बिल्कुल संत नही मानता, परम पाखण्डी मानता हूँ उनको । ये तो राजनितीज्ञ है । कौन संत है जो किसी को विवश करेगा और गाँधी जी हमेशा विवश किया करते थे । ऐसा करो, नहीं तो मैं अनशन करूँगा और ये भी कोई तरीका है तुम ऐसा करो । अरे भाई ! मैं तुम्हें मारूँगा तो हिंसा है और जब मैं अपने को मारूँगा तो हिंसा, नहीं है ? जब मैं आपको सताऊँगा तो हिंसा है, और जब मैं अपने आपको सताऊँगा तो हिंसा नहीं है ? जाने गाँधी जी ने कहीं से ये बात निकाली जब अपने आपको सताते हैं तो हिंसा नहीं होती, बिल्कुल होती है हिंसा लेकिन गाँधी जी हमेशा भूल रहे और आज तक उनके अनुयायी यही दुहाई देते रहें है, उस भूल को सुधारते नहीं कभी । तो जो संत होते हैं कभी किसी को विवश नहीं करते, लाचार

नहीं करते, इसीलिए कबीर ने हाथ जोड़ा, विनय किया कि गलती हो गई महाराज, क्षमा कर देना । अब दया करके यही बता दो कि किधर पैर करके मैं सो जाऊँ । जहाँ आपकी आज्ञा हो उधर पैर करके सो जाऊँ मैं । पंडितों ने कहा भाई ! ईधर परमात्मा है, तुम इधर कर लो सिर अपना, पैर उधर कर के सो जाओ इधर सिर करो, कबीर ने इधर सिर किया और इधर पैर कर लिये और एक बड़ी अचरज की घटना घट गई । जैसे ही उन्होंने मन्दिर की तरफ सिर किया इधर पैर किया तो मन्दिर घूम के इधर आ गया । अब पण्डित और ये पुरोहित करते तो क्या करते । उनके तो बस के बाहर की बात हो गई । तब क्या करते । कबीर के चरण छुए, माफी मांगी और चल दिए । घटना सही होया न हो लेकिन एक बात तो सही है ना, एक तथ्य तो सही है कि सारे संसार में परमात्मा सब जगह है ।

"सब घट मेरा सांईया, सूनी सेज न कोय ।
बलिहारी वा घट की, जो घट परगट होय ।।"

जब संसार में सब जगह परमात्मा है मुझ में, आप में, अणु में, परमाणु में, उत्तर में, दक्षिण में, पूर्व में, पश्चिम में आकाश में, पाताल में, तो कहाँ, कैसे सिर पैर करके सोएगे आप । शीर्षासन करके भी सोयेंगे तो भी ऊपर परमात्मा है और तो कोई दूसरा तरीका ही नहीं ना, ज्यादा से ज्यादा शीर्षासन करेंगे आप, तब ऊपर नहीं है, परमात्मा ऊपर भी तो है । तो परमात्मा सब जगह है, तो कबीर का एक उपदेश था, चेतावनी थी कि भाई परमात्मा तो सब जगह है, इस मन्दिर और मस्जिद में रखा क्या है, ये तो तुम्हारा बनाया हुआ मन्दिर, मस्जिद है, इसमें नहीं है परमात्मा । इसमें तो कंकड और पत्थर है और इस कंकड और पत्थर की तरफ कहते हैं कि तुम पैर करके मत सोओ । ये तुम्हारी नादानी है, कि बुद्धिमानी है । सरासर नादानी है, बुद्धिमानी तो इसमें है नहीं कुछ भी, तो कबीर का कहने का एक ढंग था । इसलिये उन्होंने कहा कि–

"ना मै मुरति धर सिंघासन, ना मै घंट बजाई"

ये कुछ भी मैंने आज तक जीवन में किया नहीं, केवल जीवन में परमात्मा को जाना, परमात्मा को पहचाना और उसमें मैं विलीन हो गया। मैंने अपने को उडेल दिया उनमें, और आगे कहते है कि परमात्मा कैसे मिल सकता है। साहब कैसे मिलता है। तुमको रिझाने का, उनको पाने का तरीका कौन सा है ? साहब कबीर कहते है :–

"ना हरि रीझे नेति धोती, ना पाँचों के मारे।
ना हरि रीझे जप तप कीन्हे, ना काया के जारे।।"

परमात्मा कभी नेति, धोती से रीझने वाला नहीं है, या जप तप से रीझने वाला नहीं, ना पाँचों के मरने से परमात्मा रीझने वाला नही है क्यों नही रीझता, इसका सबसे बड़ा कारण है। सब से बड़ा कारण है, यही के व्यक्ति ये सब कुछ जो करता है, योग भी करता है, ध्यान भी करता है, जप भी करता है, तप भी करता है, ये सब कुछ करता है किन्तु बिना अपने को बदले हुए करता है, यदि व्यक्ति अपने को बदल लें और फिर ये सब कुछ करे, तो उसके करने में कुछ सार्थकता भी है। बड़ा महत्व तो होता है, कि व्यक्ति अपने स्वभाव में होता क्या है ? यदि व्यक्ति अपने स्वभाव में अच्छा है, नेक है, पवित्र है तो उसके ये सारे किऐ हुए कार्य अच्छे होंगे, पवित्र होंगे, ठीक होंगे। यदि व्यक्ति का स्वभाव ही ठीक नही, व्यक्ति पवत्रि ही नहीं, नेक नहीं, तो ये सारे काम कैसे होंगे भाई ? एक व्यक्ति यदि नेक है, पवित्र है, अच्छा है, वह व्यक्ति यदि एक वैश्या के घर में भी जाता है, तो उस व्यक्ति की पवित्रता के कारण वैश्या का घर भी मंगल बन जाऐगा। और यदि व्यक्ति पवित्र नहीं, नेक नहीं तो आज जो हालत है हमारे मन्दिरों की, मस्जिदों की, आश्रमों की तीर्थों की तो देख ही रहे हैं आप जगह-जगह देखो चोरी, बदमाशी, जेब कट व्याभिचार हैं सभी जगह पनप रहे हैं, हम गलत है। इसलिए जहाँ भी जाते हैं, तो गलत काम करते हैं। यहाँ तुम चोरी करते तो दामाखेड़ा में जाके चोरी नही

करोगे ऐसा नहीं होगा । वहाँ भी जाओगे तो वहाँ भी चोरी ही करोगे क्योंकि जाने वाले तो तुम ही हो ना । और यहां जो चोरी का कर्म करते हो वो कर्म तो छूटेगा नहीं तुम्हारा । तो जैसे हो वैसे होकर जाओगे वही उपद्रव तुम वहाँ करोगे । तो तुम जैसे हो, वैसे ही तुम उपद्रव कर रहे हो और साथ में योग साध रहे हो, तो बदमाशी नहीं है तुम्हारी ? तुम जैसे के तैसे हो, गलत हो तुम, और बड़े ध्यान लगाए बैठे हो । तो तुम्हारे ध्यान से लोग ठगेंगे नहीं ? तुम गलत हो और लोगों के सामने बड़े आरती उतार रहे हो, माला पहना रहे हो, भजन गा रहे हो, ये भक्ति का जो एक नाटक खेल रहे हो, तो तुम्हारे लोगों के बीच में अनहित होगा, हित नही होगा । क्योंकि तुम गलत होना । इसलिए साहब कबीर कहते हैं कि तुम ठीक हो गए तब तो ठीक है, यदि गलत हो तो ये सब के सब गलत है तुम्हारे, इसमें कुछ नहीं रखा है, इसलिए कबीर कहते हैं कि इन कर्मों से, योग, जप, तप, ज्ञान व्रत ये सब कर्मों से, कोई अर्थ नहीं लगता । पहले तुम अपने को सुधार लो । अपने को सुधार लो, अपने को बना लो तब ठीक होगा और अपने को बनाओगे तो फिर जो आगे की बातें साहब कहते है कि परमात्मा कैसे रीझेगा, वही बातें तुम्हारे जीवन में आएँगी । साहब आगे कहते हैं :-

"दया करो धर्म को पालो, जग से रहो उदासी ।
अपना सा जीव सबको जानो, ताहि मिले अविनासी ।।
सहो कुशब्द, वाद भी छाडों, छाडों मान गुमाना ।
यही रीझ मेरे निरंकार की, कहे कबीर दिवाना ।।"

दया करो धर्म को पालो, दया करो तुम, और एक बात देखो जब तुम सही होगे तभी दया तुम्हारे अन्दर पनप पाएगी । बनावटी से दया कभी नहीं पनप पाऐंगी तुम्हारे जीवन में और दया तभी आएगी तुम्हारे जीवन में जब तुम संसार के सारे द्वन्दों से दूर हो जाओगे । संसार के जो द्वन्द्व है मैं, तू अपना पराया ये जो द्वन्द्व है । इस द्वन्द्व

से तुम अलग हो जाओगे । ये द्वन्द्व जब तुम्हारे जीवन में नहीं पनप पाऐंगे । तभी तुम्हारे अन्दर दया आएगी । इस दया को ही हम अंहिसा कहते हैं । अहिंसा का पालन करो । ये तो बहुत सरल बात हो जाती है कि अहिंसा के मार्ग को अपनाओ, पालन करो लेकिन उतना ही कंठिन होता है जीवन में अपनाना । किसी को मारना, किसी को सताना, किसी को गाली देना, किसी को कत्ल कर देना ही हिंसा नहीं कहलाती । हिंसा के छोटे-2 रूप बहुत हुआ करते हैं, जब जीवन में अहिंसा को समझने से पहले हिंसा को समझोगे तुम । अहिंसा को नहीं समझना है । हिंसा को समझना है कि हिंसा क्या है ? और उसे समझ कर तुम दूर हो जाओगे सभी हिंसाओं से, तभी अहिंसा तुम्हारे जीवन में आऐगी । छोटे-2 रूप कैसे होते है हिंसा के, देखो आप । दो चार उदाहरण देता हूँ मैं । हम लोग सब गृहस्थी हैं ना । हम लोग जब अपनी पत्नी को कहते हैं, एक-कप चाय बना कर ला दें, मेरे लिए, अपनी पत्नी पर कोई अधिकार नहीं जो तुम उसे आज्ञा दो के, एक कप चाय बना कर ले आ । ये किस अधिकार से कहते तो तुम ? उसे ? एक कप चाय ला दो ? तुम अलग हो, तुम्हारी पत्नी अलग है, तुम्हारा अस्तित्व अलग है, तुम्हारी पत्नी का अस्तित्व अलग है । तुम्हें, तुम्हारी अपनी पत्नी से कुछ भी लेना देना नहीं । लेकिन कहते हो कि एक कप चाय ला दो वो हिंसा हो गयी । तुम अपने नौकर को कहते हो कि चार बजे सुबह आकर जरा खेत में हल तो चला देना, वो भी हिंसा है क्योंकि तुम अलग हो और नौकर तुम्हारा अलग है । इसलिए तुम नौकर पर आज्ञा चलाओ, ये ठीक नहीं है पिता भी जब अपने पुत्र को आज्ञा देता है कि अमुक काम ऐसा कर और ऐसा न कर, वो भी हिंसा है । क्योंकि पिता को भी अपने पुत्र पर किसी आज्ञा को थोपने का अधिकार नहीं होता पिता स्वतन्त्र है पुत्र भी स्वतन्त्र है दोनो स्वतन्त्र हैं । और जब ऐसा होता है इस प्रकार की बातें होती है ये सारी की सारी बातें हिंसा होती है और इसका कभी हम ध्यान नहीं देते, कभी कोई नहीं ध्यान देता और हम लोग लगातार करते है

इस हिंसा को । तो फिर कैसे हमारे जीवन में अहिंसा आऐगी, कभी नहीं आ सकती । इसलिए जगह-जगह देखो, टटोलो कि कहाँ-कहाँ हमारे जीवन में हिंसा है और इन सारी हिंसाओ से बचोगे, तब जो बच जाएगा वो तुम्हारे जीवन में, अहिंसा होगी । बहुत गहरा है । जीवन की गहराई में डूबोगे तभी तुम इसे पाओगे अन्यथा नहीं । कबीर की एक साखी है, अच्छी वाणी है जो संसार के इतिहास में मिलना मुश्किल है । कबीर कहते हैं –

"बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय ।
जो दिल खोजो आपना, मुझ सा बुरा ना कोय ।।"

हम दूसरों की बुराई देखते हैं । दूसरों की बुराई देखने में दूसरों को बुराईयों से हम वंचित नहीं कर सकते, अलग नहीं कर सकते, अलग नहीं कर सकते और, हम भी बुराईयों से अलग नहीं हो सकते किन्तु उन्हीं बुराईयों को यदि हम अपने अन्दर देखें, दूसरों को तो आँख उठा कर कह देते हैं कि तुम बड़े कामी हो, क्रोधी हो, लालची हो, लोभी हो, अहंकारी हो, तुममें राग-द्वेष है । ये तो हम कह देते हैं दूसरों से लेकिन ऐसा करने से फायदा क्या होगा । क्या दूसरे लोग तुम्हारे उपदेशो से बच जाएगे ? क्या दूसरे तुम्हारे उपदेश देने से, वे लोग इनसे छुटकारा पा जाएगे ? ऐसा तो नहीं होता कभी । तुम क्या जन्म-जन्म से लोग चिल्ला रहे हो । बड़े लोग भी चिल्लाऐं, बुद्ध भी चिल्लाऐं, जीसस भी चिल्लाए । लेकिन किसी में कोई सुधार नहीं हुआ आज तक । लोग जैसे के तैसे ही हैं । आज भी क्योंकि दूसरों के कहने से कभी कोई फर्क नहीं होता । यदि उन्हीं बातों को यदि हम अपने जीवन की गहराई में ढूँढे, कि मेरे जीवन में कहाँ काम है, कहाँ क्रोध है, कहां लोभ है, कहाँ राग-द्वेष है। तो निश्चित ही उन बातों से अलग हो जाएंगे । कोई जानकर अपनी बुराई को जीवन बिता नहीं सकता । हम नहीं जानते हैं इसलिये जीवन व्यतीत करते हैं । अरे भाई आप यहाँ से उठकर अपने घर जाऐंगे आप लोग, जाते-जाते आपके पैर में कीचड़ लग जाए, गोबर लग जाए तो वैसा जाके आप अपने

घर में सो नहीं जाएँगे या भोजन करने के लिए बैठ नहीं जाएँगे । आप तो जल मंगाऐंगे, पानी मांगेंगे, कीचड़ को या गोबर को धोएंगे तब कहीं आप विश्राम करेंगे या भोजन करेंगे । जो कुछ भी करेंगे, करेंगे आप । उसी कीचड़ लगे पैर को आप कुछ भी नहीं करने वाले यही बात यदि आपको मालूम हो जाए कि आपके अंदर काम है, क्रोध, मोह है, लोभ है, तो फिर कैसे आप जिऐंगे, कैसे आप जीवन व्यतीत करेंगे, उसको दूर करने की कोशिश करेगें उस को दूर करने की कोशिश करेगें । और यही सबसे बड़ा सुधार का तरीका है । यदि हम अपने ही को, प्रत्येक व्यक्ति यदि अपने को सुधारने का दावा कर लें, अपने को सुधारने में लग जायें तब कोई घड़ी दूर नहीं कि हमारा समाज सुधर जाये, हमारा सम्प्रदाय सुधर जाये, हमारा देश सुधर जाये और हमारा विश्व सुधर जाये, केवल एक ही तरीका है, वो भी कबीर साहब की साखी पर कि :–

"बुरा जो देखन मैं चला"

अपनी बुराई को देख लो तो सब कुछ सुधर जायेगा, नहीं देख पाते तो आज कुछ भी नहीं सुधरता । देखेंगे राजनितिज्ञों को कि कितना गला फाड़-फाड़ कर चिल्लाते हैं । उनसे चिल्लाने वाला उनसे नादान आदमी दुनियाँ में और कोई नहीं मिलता, ये दूसरे से कहते हैं कि ऐसा करो वैसा करो,. और खुद क्या कर रहे हैं उनको पता नहीं है । ऐसे ही धर्म गुरू लोग भी चिल्लाते हैं ऐसा करो, ऐसा करो, सच बोलो, ये करो, सच्ची राह में चलो और खुद का जीवन किस राह पर जा रहा है, उनको खुद को पता नहीं । यदि हम अपना रास्ता, अपनी राह सुधार लें, अपना मार्ग सुधार लें, अपना जीवन सुधार लें तो क्या होगा ? तत्काल सुधर जाएगा । अरे ! ये गाँव में आप मीटिंग बुलाओ और मीटिंग बुलाकर पंचायत करो, कहो भाई पूरे गाँव में व्यवस्था करो के इस गाँव की सफाई हो जाए इसके लिए आदमी नियुक्त करो, तो ऐसा करने से गाँव की सफाई नहीं होगी बल्कि कूडा करकट और आ

जाएगें, आपके गांव में यदि प्रत्येक व्यक्ति और कुछ ना करे, गांव में अपने घर के दरवाजे को ही प्रत्येक व्यक्ति साफ कर ले तो पूरा गाँव साफ हो जाएगा, साफ-सुथरा हो जाएगा । उसी प्रकार यदि अपने को बना लें तो, पूरा समाज बन जाएगा, पूरा राष्ट्र बन जाएगा, पूरा विश्व बन जाएगा इसलिए दया करो, दया सबंसे बड़ा महत्वपूर्ण कार्य है । दया करो धर्म को पालो, धर्म को अपने जीवन में उसका पालन होना चाहिए । धर्म का पालन मतलब संसार में एक ही धर्म होता है । अनेक धर्म नहीं होते और वह धर्म होता है केवल परमात्मा को जानना, और तो जो बाकी है वो सम्प्रदाय कहलाते हैं, धर्म नहीं कहलाते । तो उस परमात्मा को जानो ।

'जग से रहो उदासी'

जग से उदास रहना है, इसमें लिप्त नहीं रहना ।

"अपना सा जीव सबको जानो ताहि मिले अवनाशी ।"

अपना सा जीव है, जैसे तुम अपने जीव को जानते हो, जैसे तुम्हें पीड़ा होती है, दर्द होता है, एक कांटा लग जाए तुम्हारे पैर में, तो तुम रोते हो चिल्लाते हो और तुम्ही हो, जो दूसरे के बच्चो की गर्दन में छुरी चलाते हो । कितने ना समझ लोग हो, तुम्हारे पैर में कांटा गढे तो तुम रोओ, आँसू बहाओ, चिल्लाओं और तुम्हीं जब दूसरे की गर्दन में छुरी चलाओ, तब दया कहाँ गयी थी । और जो बड़े-बड़े तिलक लगा लेते हो, कंठी पहन लेते हो । ये तो सब कुछ करते हो तब कहाँ गयी दया । कबीर साहब ने इन बातों पर कभी ध्यान नहीं दिया कि तुम तिलक लगाते हो, के कंठी पहनते हो, के नमाज पड़ते हो, के जाकर मस्जिद में घुटना टेकेते हो ऐसा नहीं । कबीर ने सीधे धर्म का सम्बन्ध जीवन से जोड़ा है । जब मन्दिर में लोग जाते हैं, प्रार्थना करते हैं तब कबीर बडें बेचैन हो जाते हैं व्याकुल हो जाते हैं । कबीर कहते हैं कि अरे तुम मन्दिर में प्रार्थना करने आए हो, झुकने आए हो ।

अरे ! तुमने अपने पड़ौस के बच्चों को देखा । एक मासूस बच्चा तुम्हारे पड़ोस में भूखा प्यासा रो रहा है और तुम यहाँ मन्दिर में आकर फूल चढ़ा रहे हो । ये तुम्हारा काम है ? अरे तुम जाओ वहाँ, और उस बच्चे को दूध दो, जल दो, यदि तुम उसे तृप्त कर दो इससे बड़ी पूजा और परमात्मा की 'होगी क्या ? इससे बड़ी तो पूजा नहीं होगी, यदि ऐसा नहीं कर सकते, तो दुनियाँ में और किसी का अपमान नहीं होता । न इससे हिन्दु बिगड़ता, ना मुसलमान बिगड़ते । अपमान तो होता है केवल उसी परमात्मा का, क्योंकि मासूम बच्चा उसी परमात्मा का भेजा हुआ है और तुम उसे ठुकरा कर चले आए हो, धिक्कार है तुम्हें । मुल्लाओं से कहते हैं, मुल्लाजी अरे तुम मजिस्द में जोर-जोर से चिल्ला रहे हो, ओर कभी जाके देखो जरा नीचे तो उतरके देखो, महिलाओं के ऊपर क्या अत्याचार हो रहें है। एक अबोध, एक अबला पर जब लोग अत्याचार कर रहें है उसका शील भंग कर रहे हैं और तुम यहाँ मस्जिद़ में चढ़कर चिल्ला रहे हो ? अरे जाओ लोगों को रोको, ऐसा ना करने से उनको मना करो, यदि एक महिला का शील बचा लेते हो, तो हजार खुदाओं की प्रार्थना से तो बड़ी प्रार्थना होगी ये । और तुम उसको छोड़ कर तुम यहाँ ही आऐ हो बेकार में चिल्लाने के लिए । तो जाओ चलो, लौट चलो, ऐसा करते हुए तुम्हारे खुदा का, अपमान नहीं होता । यहाँ आकर तुम क्या करते हो, यदि तुम उसका शील नहीं बचा सके तो इससे बड़ा अपमान खुदा का और कुछ नहीं होगा । यदि किसी वृद्ध पुरुष के सीने में गोली चल जाए, गोली दाग दी जाए तो दुनियाँ में किसी का अपमान नहीं होता । तब केवल वो ही धर्म केवल वोही परमात्मा केवल वोही मालिक इस संसार में अपने को परदेशी मानकर रोता है । कबीर ने कहा कि इन हरकतों को परदेशी मान कर रोता है । कबीर ने कहा कि इन हरकतों से बचो और जो जीवन का सार है सही है उस और तुम चलो । इसलिए साहब कबीर कहते हैं :—

'दया करो धर्म को पालो, जग से रहो उदासी । अपना सा जीव सबको जानो'

अपना सा जीवन सबको जानो, तभी तो परमात्मा मिलेगा नहीं तो कैसे मिलेगा ?

'सहो कुशब्द'

तुम को हम अच्छी बात कह देते हैं कि तुम बड़े पंडित हो तब तो बड़े खुश हो जाते हो और हम कह देते हैं कि बड़े मूर्ख हो तो तुम हम पर डंडा चला देते हो, तो ऐसा मत करो । जैसा तुम अच्छे शब्दों को सुन लेते हो, ऐसे ही बुरे शब्द को सुन लो और कबीर का कहने का अर्थ यही है कि अपने जीवन को ऐसा बना लो तुम कि तुम्हारे जीवन में अच्छे और बुरे का कोई अर्थ ही ना हो । कोई तुम्हारी प्रशंसा करें तो ठीक, कोई तुम्हें गाली दे तो ठीक । जैसे एक मृतक होता है ना मरा हुआ, उस मरे हुए आदमी को तुम खूब उसकी प्रशंसा करो पास में बैठकर, वो मरा हुआ आदमी कभी खुश होने वाला नहीं है । उसको खूब गाली दो तो भी वो नराज होने वाला नहीं है । उसी प्रकार से तुम अपने आप को मृतक बना लो जीते जी, कोई जहर खा कर नहीं, साधना से । नहीं तो तुम जहर खा लो बाबा और मुझे बदनाम कर दो, ऐसा नहीं करना । जीते जी, ऐसी साधना करो, जीवन के स्तर को इतना बढ़ा लो कि कोई गाली दे तो कोई असर नहीं, और कोई प्रशंसा करे तो कोई असर नहीं, इतना समतल समरूप बना लो अपने जीवन को ।

"सहो कुशब्द वाद भी छाडों, "

ये वाद-विवाद दुनियां का छोड़ दो ।

"सहो कुशब्द वाद भी छोड़ो, छोडो मान गुमाना"

ये मान अभिमान का ये जो चक्कर है, ये भी छोड़ दो । एक

बात देखेंगे आप, ये मान अपमान की बात हमारे जीवन में तभी आती है जब हम दूसरों को महत्व देते हैं क्योंकि जीवन में हमेशा हम द्वन्द्व में जीते हैं । सुख में, दुख में, मान, अपमान, जय-पराजय, लाभ-हानि इनको लेकर हम जीवन में चलते हैं । इसलिए जब हम एक को महत्व देतें हैं तो दूसरा भी स्वाभाविक रूप से आ जाता है । जब हम सुख को चाहते हैं, तो दुख जाऐगा कहाँ हमारे जीवन से । जितना बड़ा सुख हम चाहेंगे, उतना बड़ा हमको दुःख मिलेगा ही, क्योंकि सुख चाहते हो ना । जितनी बड़ी जय चाहते हैं पराजय भी उतनी ही हमको मिलेगी, पराजय जाऐगी कहाँ । जितना हम सम्मान चाहते हैं उतना हमें बड़ा अपमान भी मिलेगा, क्योंकि हम सम्मान चाहते हैं ना, तो अपमान जाऐगा कहाँ हमारे जीवन से, अपमान तो मिलेगा । यदि आप सम्मान न चाहो तो अपमान नहीं मिलेगा । यदि सुख न चाहो आप तो दुःख नहीं मिलेगा । यदि जय न चाहो, तो पराजय कभी होगी भी नहीं आपकी । अरे ! भाई देखो एक उदाहरण है :– मैं आपके यहाँ आया, मेरे मन में एक सम्मान की भावना है कि मैं यहाँ आऊँगा, मेरे लिए स्टेज बिछेगा, मुझे लोग फूल मालाऐं पहनाऐंगे । ये सम्मान की बातें लेकर मैं आऊँ और, ये ना हो मेरे साथ, तो मुझे ऐसा लगता है कि मेरा बड़ा अपमान हुआ, हुआ मेरा कुछ भी नहीं । आप के मन में भले ही ना हो लेकिन मुझे, ऐसा लगता है, कि मेरा बड़ा अपमान हुआ है । यदि यही बात मेरे मन में, सम्मान का भाव लेकर आया हूँ, इसलिए ऐसा लगता है । यदि सम्मान का भाव न हो तब कोई अर्थ नहीं रखता । आप मेरे लिए टेबल बिछाओं तो वाह-वाह, न बिछाओ तो वाह-वाह । फूलों की माला पहनाओ तो वाह-वाह, न पहनाओ तो वाह-वाह, कोई अर्थ ही नहीं रखता भाई इन बातों से ।

एक संत जी थे चीन में लाओत्त्सो, उनका नाम था । एक दिन उनके जो शिष्य सम्प्रदाय थे शिष्य लोग थे, वो बैठे थे । अपने शिष्य

लोगों से एक बात कहीं, बैठे-बैठे उन्होंने कहा, देखों दुनियाँ में मुझे कोई हरा नहीं सकता । उनके जितने भी शिष्य थे, बड़े प्रसन्न हो गये । अरे ! हमारे गुरुजी को कोई हरा नहीं सकता, तो कम से कम ये तरीका हम भी तो जान ले कि कोई हमें हरा नहीं पाएगा । तो सबके सब शिष्य खड़े हो गए, निवेदन करने लगे धरणा दे दिया । गुरुजी दया करो महाराज कि अब तो ये तरीका हमें भी बता दो, कि दुनियाँ में कोई हमको हरा नही सके । ये तो आपने बड़ा अच्छा तरीका पाया है । वो तो लाओत्सो जी वो बड़े संत थे, लाओत्सो जी हँसते हुए कहते हैं देखो, मैं सदैव से हारा हुआ आदमी हूँ । जो सदैव से हारा हुआ आदमी हो उसको कौन हराएगा ? कोई हराएगा ? नहीं हराएगा । अरे एक पहलवान भैया, जो अकड़ कर आऐगा कि मैं जीत जाऊँगा, मैं लड़ सकता हूँ उसी को तो दूसरा हरा सकता है । जो हाथ जोड़ ले दादा मैं तो हारा हुआ हूँ और कैसे हराओगे आप ? कोई मारने के लिए आए, अरे हाथ जोड़ लो दादा मुझे क्या मारोगे, में तू खुद मार खाया हुआ आदमी हूँ । अरे ! संसार भर में तो मार खाते आया हूँ और मुझे मार कर क्या करोंगे आप । तो आपको मारने का कोई तरीका है, कोई तरीका नहीं । तो संत जी ने कहा कि मैं तो, सदैव से हारा हुआ हूँ दादा तो दुनिया, में कौन मुझे हरायेगा, यदि आप सदैव से हारे हुए हो जाओ तो हराने का कोई तरीका नहीं आपको । मैं मान नहीं चाहूँगा तो आपमान का कोई प्रश्न ही नहीं होता तो :–

'छोड़ो मान गुमाना'

जव इतनी बातें आपके जीवन् में आ जाये तब क्या होगा । कहे कवीर –

"यही रीझ मेरे निरंकार की, "

यही तरीका है, जो चार-पाँच मैंने बातें बताई, यही तरीका है । यदि आप इसे अपना लेते हैं जीवन में, तभी परमात्मा आपसे रीझ पायेगा अन्यथा नहीं ।

"यही रीझ मेरे निरंकार की, कहे कबीर दिवाना"

कबीर दिवाने थे, और मैं चाहता हूँ कि आप सब के सब दिवाने हो जाओ । संसार के दिवाने नहीं कबीर दिवाने थे, परमात्मा को पाकर, कबीर दिवाने थे परमात्मा को जानकर और आप भी दिवाने हो जाओ, परमात्मा को पाकर, साहब को पाकर, मालिक को पाकर ।

साहेब बन्दगी ।